

NAME OF THE COLLEGE - Godda college, Godda

SL NO	Date	Name of the Teacher	Subject	Sem	Topic	Mode Adopted
01	14.04.2020	Md Mahtab Ahmad	Tc-201	B.Ed Sem-02	Thinking Process	Ppt

M.M. Ahmad
Dept of Education
Godda college, Godda

चिन्तन का अर्थ व परिभाषा

(MEANING AND DEFINITION OF THINKING)

मनुष्य को संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा गया है। इसका कारण है—उसका चिन्तनशील होना। जीवधारियों में मनुष्य ही सर्वाधिक चिन्तनशील है और यही चिन्तन मनुष्य और उसके समाज के विकास का कारण है। शिक्षा द्वारा मनुष्य की चिन्तन शक्तियों को विकसित किया जाता है।

मनुष्य के सामने कभी-कभी किसी समस्या का उपस्थित होना स्वाभाविक है। ऐसी दशा में वह उस समस्या का समाधान करने के उपाय सोचने लगता है। वह इस बात पर विचार करना आरम्भ कर देता है कि समस्या को किस प्रकार सुलझाया जा सकता है। उसके इस प्रकार सोचने या विचार करने की क्रिया को 'चिन्तन' कहते हैं। दूसरे शब्दों में, चिन्तन विचार करने की वह मानसिक प्रक्रिया है, जो किसी समस्या के कारण आरम्भ होती है और उसके अन्त तक चलती रहती है।

हम चिन्तन के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषाएँ दे रहे हैं, यथा—

1. रॉस—"चिन्तन, मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पहलू है या मन की बातों से सम्बन्धित मानसिक क्रिया है।"

"Thinking is mental activity in the cognitive aspect, or mental activity with regard to psychical objects."
—Ross (pp. 196-197)

2. वेलेन्टाइन—"चिन्तन शब्द का प्रयोग उस क्रिया के लिए किया जाता है, जिसमें शृंखलाबद्ध विचार किसी लक्ष्य या उद्देश्य की ओर अविराम गति से प्रवाहित होते हैं।"

"It is well to keep the term 'thinking' for an activity which consists essentially of a connected flow of ideas which are directed towards some end or purpose."

—Valentine (p. 287)

3. रायबर्न—"चिन्तन, इच्छा-सम्बन्धी प्रक्रिया है, जो किसी असन्तोष के कारण आरम्भ होती है और प्रयास एवं त्रुटि के आधार पर चलती हुई उस अन्तिम स्थिति पर पहुँच जाती है, जो इच्छा को सन्तुष्ट करती है।"

"Thinking is a conative process, arising from a felt dissatisfaction, and proceeding by trial or error to an end-state which satisfies the conation."
—Ryburn (p. 250)

4. वारेन—“चिन्तन एक प्रतीकात्मक स्वरूप की विचारात्मक प्रक्रिया है। इसका आरम्भ व्यक्ति के समक्ष उपस्थित किसी समस्या या कार्य से होता है। प्रयत्न तथा भूल से युक्त समस्या प्रवृत्ति से प्रभावित क्रिया होती है। इसके अन्त में समस्या का समाधान मिलता है।”

इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि चिन्तन मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पथ है। यह प्रक्रिया किसी विशेष उद्देश्य की ओर परिलक्षित होती है। इसमें इच्छा तथा असंतोष का महत्त्व है। इच्छा तथा असंतोष मनुष्य को चिन्तन करने के लिए विवश करते हैं।

चिन्तन की विशेषताएँ

(CHARACTERISTICS OF THINKING)

सी. टी. मार्गन के शब्दों में—“वास्तव में प्रतिदिन की वार्ता में प्रयोग होने वाले चिन्तन शब्द में विभिन्न क्रियाओं की संरचना निहित है।” इसका सम्बन्ध गम्भीर विचारशील क्रिया से है। इस दृष्टि से चिन्तन की विशेषतायें इस प्रकार हैं—

1. विशिष्ट गुण—चिन्तन, मानव का एक विशिष्ट गुण है, जिसकी सहायता से वह अपनी बर्बर अवस्था से सभ्य अवस्था तक पहुँचने में सफल हुआ है।

2. मानसिक प्रक्रिया—चिन्तन, मानव की किसी इच्छा, असन्तोष, कठिनाई या समस्या के कारण आरम्भ होने वाली एक मानसिक प्रक्रिया है।

3. भावी आवश्यकता की पूर्ति हेतु व्यवहार—चिन्तन किसी वर्तमान या भावी आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए एक प्रकार का व्यवहार है। हम अंधेरा होने पर बिजली का स्विच दबाकर प्रकाश कर लेते हैं और मार्ग पर चलते हुए सामने से आने वाली मोटर को देखकर एक ओर हट जाते हैं।

4. समस्या समाधान—मर्सल (Mursell, p. 160) के अनुसार—चिन्तन उस समय आरम्भ होता है, जब व्यक्ति के समक्ष कोई समस्या उपस्थित होती है और वह उसका समाधान खोजने का प्रयत्न करता है।

5. अनेक विकल्प—चिन्तन की सहायता से व्यक्ति अपनी समस्या का समाधान करने के लिए अनेक उपायों पर विचार करता है। अन्त में, वह उनमें से एक का प्रयोग करके अपनी समस्या का समाधान करता है।

6. समस्या समाधान तक चलने वाली प्रक्रिया—इस प्रकार, चिन्तन एक पूर्ण और जटिल मानसिक प्रक्रिया है, जो समस्या की उपस्थिति के समय से आरम्भ होकर उसके समाधान के अन्त तक चलती रहती है।

चिन्तन के प्रकार

(KINDS OF THINKING)

‘चिन्तन’ चार प्रकार का होता है, यथा—

1. प्रत्यक्षात्मक चिन्तन (Perceptual Thinking)—इस चिन्तन का सम्बन्ध पूर्व अनुभवों पर आधारित वर्तमान की वस्तुओं से होता है। माता-पिता के बाजार से लौटने पर यदि बालक को उनसे काफी दिनों तक टाफी मिल जाती है, तो जब भी वे बाजार से लौटते हैं, तभी टाफी का विचार उसके मस्तिष्क में आ जाता है और वह दौड़ता हुआ उनके पास जाता है। यह निम्न स्तर का चिन्तन है। अतः यह विशेष रूप से पशुओं और बालकों में पाया जाता है। इसमें भाषा और नाम का प्रयोग नहीं किया जाता है।

2. प्रत्ययात्मक चिन्तन (Conceptual Thinking)—इस चिन्तन का सम्बन्ध पूर्व-निर्मित प्रत्ययों से होता है, जिनकी सहायता से भविष्य के किसी निश्चय पर पहुँचा जाता है। कुत्ते को देखकर बालक अपने मन में प्रत्यय का निर्माण कर लेता है। अतः जब वह भविष्य में कुत्ते को फिर देखता

है, तब वह उसकी ओर संकेत करके कहता है—‘कुत्ता’। इस चिन्तन में भाषा और नाम का प्रयोग किया जाता है।

3. कल्पनात्मक चिन्तन (Imaginative Thinking)—इस चिन्तन का सम्बन्ध पूर्व-अनुभवों पर आधारित भविष्य से होता है। जब माता-पिता बाजार जाते हैं, तब बालक कल्पना करता है कि वे वहाँ से लौटने पर उसके लिए टाफी लायेंगे। इस चिन्तन में भाषा और नाम का प्रयोग नहीं किया जाता है।

4. तार्किक चिन्तन (Logical Thinking)—यह सबसे उच्च प्रकार का चिन्तन है। इसका सम्बन्ध किसी समस्या के समाधान से होता है। **जॉन डीवी (Dewey)** ने इसको ‘विचारात्मक चिन्तन’ (Reflective Thinking) की संज्ञा दी है।

चिन्तन की क्रिया में अनेक क्रियायें शामिल रहती हैं। इसमें प्रमुख भूमिका रहती है प्रयत्न एवं भूल की। इसमें विचार का संकेत रहता है। सड़कों पर लिखा रहता है—सावधानी हटी, दुर्घटना घटी। इसमें सावधान रहने का संकेत है।

चिन्तन एक ज्ञानात्मक (Cognitive) क्रिया है। इसमें प्रत्ययात्मक तथा कल्पनात्मक ज्ञान निहित होता है। प्रतीकों का प्रयोग भी इसमें किया जाता है।

चिन्तन के सोपान (STEPS OF THINKING)

ह्यूजोज (Hughos) ने चिन्तन के ये सोपान बताये हैं—

1. समस्या का आकलन (Appreciation of Problem)—चिन्तन समस्या के उत्पन्न होने से सम्पन्न होता है। मूर्त तथा अमूर्त समस्यायें, जिज्ञासा के माध्यम से चिन्तन का आरम्भ करती हैं। मूर्त से अमूर्त की ओर इस पद में बढ़ा जाता है।

2. सम्बन्धित तथ्यों का संकलन (Collection of Data)—समस्या को समझने के बाद उन तथ्यों को एकत्र किया जाता है जो समस्या का कारण खोजने में सहायक होते हैं। तथ्यों के संकलन में प्रेरणा का महत्त्व भी होता है।

3. निष्कर्ष पर पहुँचना (Driving at Conclusion)—तथ्यों का संकलन कर उनका विश्लेषण किया जाता है। इस विश्लेषण से किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है।

4. निष्कर्ष का परीक्षण (Testing Conclusion)—चिन्तन में प्राप्त परिणामों का परीक्षण कर उसकी जाँच की जाती है। इससे चिन्तन की वैधता तथा विश्वसनीयता की परीक्षा हो जाती है।

चिंतन के साधन (Tools of Thinking)

चिंतन की प्रक्रिया से जुड़े हुए तत्त्वों तथा काम में आने वाले साधनों को निम्न रूप में समझा जा सकता है—

1. **बिम्ब (Images)**—प्रायः 'बिम्ब' चिंतन-साधन के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। मानसिक चित्रों के रूप में 'बिम्बों' में व्यक्ति के उन वस्तुओं, दृश्यों तथा व्यक्तियों से सम्बन्धित व्यक्तिगत अनुभव सम्मिलित होते हैं जिन्हें वास्तविक रूप में देखा हो या जिनके बारे में सुना या अनुभव किया हो। कई 'स्मृति-बिम्ब' होते हैं जो इन ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभवों पर आधारित होते हैं। कई 'कल्पना-बिम्ब' होते हैं जो कल्पनाओं पर आधारित होते हैं। अतः 'बिम्ब' वास्तविक वस्तुओं, अनुभूतियों तथा क्रियाओं के प्रतीक होते हैं।
2. **संप्रत्यय (Concepts)**—संप्रत्यय भी 'चिंतन' का एक महत्वपूर्ण साधन है। 'संप्रत्यय' एक सामान्य विचार है जो किसी सामान्य-वर्ग के लिए प्रयुक्त होता है और जो उसी सामान्य वर्ग की सभी वस्तुओं या क्रियाओं की किसी सामान्य विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है। संप्रत्यय निर्माण या सामान्यीकरण से हमारे चिंतन प्रयासों में मितव्ययिता आती है। उदाहरणस्वरूप जब हम 'बन्दर' शब्द सुनते हैं तो तत्काल हमारे मन में 'बन्दरों' की सामान्य विशेषताएँ ही नहीं घूम जातीं बल्कि 'बन्दरों' के सम्बन्ध में अपने व्यक्तिगत अनुभव भी हमारे चेतना पटल पर आ जाते हैं और हमारे 'चिंतन' को आगे बढ़ाते हैं।

3. **प्रतीक एवं चिन्ह (Symbols and signs)**—प्रतीक एवं चिन्ह वास्तविक विषयों, अनुभूतियों तथा क्रियाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। ट्रैफिक की बत्तियाँ, रेलवे-सिगनल, स्कूल की घंटियाँ, गीत, झण्डा, नारे — सभी प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं। चिंतन में संप्रत्यय (Concepts) भी प्रतीकों एवं चिन्हों द्वारा अभिव्यक्त होते हैं।

इन प्रतीकों एवं चिन्हों से चिंतन को बढ़ावा मिलता है। इनकी सहायता से तत्काल ज्ञान हो जाता है कि क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए — जैसे 'हरी झण्डी' का हिलाना हमें बता देता है कि गाड़ी चलने वाली है और हमें गाड़ी में बैठ जाना चाहिए।

इसी प्रकार गणित में (+) का निशान बता देता है कि हमें क्या करना है। बोरिंग (Boring), लांगफील्ड (Langfield) तथा वैल्ड (Weld) ने इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाला है, "प्रतीक एवं चिन्ह मोहरे एवं गोटियाँ हैं जिनके द्वारा चिंतन का महान् खेल खेला जाता है। इसके बिना यह खेल इतना अभूतपूर्व और सफल नहीं हो सकता।" (Symbols and signs are thus seen to be the pawn and pieces with which the great game of thinking is played. It could not be such a remarkable and successful game without them.— 1961, p. 199)

4. **भाषा (Language)**—भाषा केवल पारस्परिक सम्पर्क बनाने का ही साधन नहीं बल्कि चिंतन का भी साधन है। इनमें 'शब्द' होते हैं जो प्रतीकात्मक होते हैं। कई बार हम 'शब्दों' के स्थान पर इशारों का प्रयोग करते हैं। अंगूठा दिखाना, मुस्कराना, भौहें चढ़ाना, कन्धे झटकना — आदि महत्वपूर्ण अर्थ रखते हैं। 'चिंतन प्रक्रिया' के लिए भाषा एक सशक्त एवं अत्यन्त विकसित साधन है।

चिंतन के प्रकार